अथ चतुर्दशमासिक श्राद्ध

"चतुर्दश मासिक श्राद्ध" मासिक (महीने का) है । इस श्राद्ध में एक साथ १४ पिण्ड होते हैं । पूर्व से पश्चिम या पश्चिम से पूर्व जहाँ की जैसी रीति हो, करे, क्योंकि इस महीने का यहाँ उस महीने का वहाँ श्राद्ध हुआ, तब इसमें शंका या अड़चन होना व्यर्थ है ।
मासिक श्राद्ध १४ महीनों का अलग-अलग या एक साथ सभी महीने का नाम जोड़कर भी हो सकता है ।

१४ मासिक श्राद्ध के -

१ प्रथम मासिक, द्वितीय मासिक, तृतीय मासिक, चतुर्थ मासिक, पंचम मासिक, ऊनषाण्मासिक, षाण् मासिक, सप्तम मासिक, अष्टम मासिक, नवम मासिक, दशम मासिक, एकादश मासिक, ऊनद्वादश मासिक और द्वादश मासिक

जिस वर्ष में अधिक मास हो उस वर्ष में एक पिण्ड अधिक मासिक, अधिक होगा । उस श्राद्ध को एकादश मासिक श्राद्ध के बाद अथवा जितने महीने के बाद अधिकमास पड़े, करे और संकल्प में 'षोडश श्राद्ध' की जगह 'सप्तदश श्राद्ध' का प्रयोग करे ।

दिशा रक्षण नीव बन्धन-

एक दोनिया मे पीली सरसों को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से ढौंप कर समन्त्रक अभिमन्त्रित कर नीचे संकेतिक दिशाओं में छींट कर बची सरसों दोनिया समेत दाहिनी तरफ कमर में बॉस ले ।

ॐ नमो नमस्ते गोविंद पुराण पुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषिकेश ! रक्षा त्वं सर्वतो दिशः।।

ॐ प्राच्यै नमः (पूर्व दिशा में), ॐ अवाच्ये नमः (दक्षिण दिशा में), ॐ प्रतिच्यै नमः (पश्चिम दिशा में), ॐ उदोच्यै नमः (उत्तर

दिशा में), ॐ अन्तरिक्षाय नमः (ऊपर में), ॐ भूम्यै नमः (पृथ्वी) पर।

श्राद्ध संकल्प -

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतु षोडश (सप्तदश वा) श्राद्धान्तर्गत- अमुकमासिक श्राद्धसु (एकतंत्रेन-अमुका मूक मासिकश्रद्धादि बा) अहं करिष्ये।

मन्त्र जप -

गायत्री जप तीन बार एवं हरिस्मरण-अधोलिखित मंत्र जप तीन बार करें।

दक्षिण कार्य प्रेतासन-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

अपसव्य दक्षिणाभिमुख

वेदी निर्माण-

बालू या तीर्थमिट्टी से १४ या १५ वेदी बनाकर सबों पर पत्ता दक्षिणाभिमुख रख कर उन सबों पर तीन-तीन कुश दक्षिणाग्र रख दे

आसन संकल्प -दक्षिण बरखोरी पर अक्षत छोड़ें-

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अमुक, मासिकश्रद्धे) (अमुका मासिक-श्रद्धेषु) इदमासनम् (इमान्यासननि) ते माया दीयते (दियेन्ते) तवोपतिष्ठताम् (तवोपुप्तिष्ठन्तम्)।

इस संकल्प वाक्य में एक मासिक श्राद्ध और एक मन्त्र से चतुदर्श मासिक

श्राद्ध का भी संकल्प है, समझ कर वाक्य बोलें। वेदी के पत्ते बाले कुशों पर संकल्प पढ़

तिल विकिरण मन्त्र- दक्षिण बोरी पर अक्षत छोड़ें-

ॐ अपहता असुर रक्षाऽसि वेदिशदः।

प्रेता वाहन - दोनो हाथ उल्टा लगावे

ॐ अद्य अमुकगोत्रम् अमुकप्रेतम् आवाहये।

मन्त्र - हाथ बालु के पास रखे-

अयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथि-भि-र्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वाध्याय मदन्तोऽधि-ब्रुवन्त्व-समान्।।

अर्धपात्र करण-

एक दोनिया बायें हाथ में रख कर उसमें समन्त्रक जल, तिल और कुश डाले, चन्दन- फूल मौन होकर डाले ।

जलदान मन्त्र -

(1)ॐ शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये। संय्योरभिस्त्रवन्तु नः।

तिलवान मन्त्र-

(2)ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।
प्रत्नमद्भिः प्रात्तः स्वधया पितृ लोकान् प्रीणाहि न स्वाहा।

कुश दान मंत्र -
(3)ॐ पवित्रेस्थो वैष्णवौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यबिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

अभिमन्त्रण मन्त्र - दोनी को बाएं हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढके-
ॐ या दिव्या आपः पयसा संभुवुर्या अंतरिक्ष उत् पार्थवीर्यः। हिरण्यवर्णा यज्ञि यस्तान आपः शिवा श गुॅ स्योना सुहवा भवन्तु॥
दोनी को बाएं हाथ में रख रहे दाहिने हाथ में तिल जो जल-
संकल्प-
ॐ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अमुकमासिकश्रद्धे एष हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।
फिर पते से सभी कुश निकाल कर दोनी में रखें और अपने आसन से पश्चिम उलट दे
अर्धपात्र उलटने का मन्त्र-- ॐ पित्रे स्थानमसि।

स्नान, चंदन, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमनीय, पूगीफल, पान और आचमन एवं पूजन कर संकल्प करें।
संकल्प -
अक्षत जल लेकर पात पर छोरे- (चावल चूड़ा इत्यादि वाले पर)
ॐ अद्य अमुकगोत्र अमुकप्रेत अमुकमासिकश्रद्धे एतानि स्नान, ॐ चंदन, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यचमनीय, पूगीफल, तांबूल, द्रव्य, दक्षिणादिनि ते माया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

मण्डल-करण-

पत्ता समेत प्रेतासन बालु को जल से घेर दे।

मंत्र - यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परि रक्षति।
एवं मंडलोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।

भू-स्वामी

अन्न लेकर पुर्व वाला बखोरी पर रखे-

मन्त्र- ॐ इदमन्नमेतद् भू-स्वामीपितृभ्यो नमः।

अन्नादि दान-

कर्ता दक्षिण बखोरी पर अन्न परोसे उस पर पकवान घी मधु दोनी में जल इत्यादि रखें-

त्रिकुशा लेकर के दोनों हाथ नीचे लगाएं

मन्त्र-

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिंधवः माधवीः सन्तवो-पधिः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् भौतिक रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिकर्मधुमां अस्तु सूर्यः। माधविर्गावो भवन्तु नः। ॐ मधु मधु मधु।

पात्रालम्भन -

बाया हाथ लगाए रखें उस पर दाहिना हाथ पलट के लगाएं

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतेऽमृतं जुगमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निद्धे पदम्। समूदमस्य प सुरे स्वाहा।। कृष्ण काव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अंगुष्ठ दर्शन-

बाया हाथ लग रहे दाहिने हाथ की अंगूठा से अन्न जल छुए

मन्त्र- ॐ इदम्न्नम्। इमा आपः। इदमाज्यम् । इदं कविः ।

तिल विकिरण मन्त्र-

बाएं हाथ लगाए रखें दाहिने हाथ से तिल अक्षत छिते-

मन्त्र- ॐ अपहता असुर रक्षार्थंसि वेदिशदः।

अनादि दान संकल्प -

बाएं हाथ लगाए रखें दाहिने हाथ में तिल जौ जल लेकर के संकल्प करें-

ॐ अद्य अमुकगोत्राय अमुकप्रेतय अमुकमासिक श्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते माया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

सव्य हो पूर्वाभिमुख तीन बार गायत्री जप करे।

प्रार्थना-

ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं बिधिहीनं च यद् भवेत् तत्सर्व-मच्छिद्रमस्तु।

कर्ता कुश को तोर कर पैर के मिचे दबाकर

कृनुख पाठ पुरुषोत्तम इत्यादि

पुनः तीन बार गायत्री जप करे ।

दअपसव्य दक्षिणाभिमुख विकिरा-कर्म-

मन्त्र-

पक्षिम बखोरी का अन्न उठाकर सभी कुश लेकर अपने आसन से पश्चिम बहार कर अन्न उलट दे

महापात्रा या पुरोहित मंत्र को बोल-

ॐअसंस्कृत प्रणितानां त्यागिनां कुल भागि नाम्।
उच्छिष्ट भाग धेयानां दरभेषु विकिराऽसनम्।।

अग्नि दग्धाश्च ये जीव येऽप्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यन्तु परां गतिम् ॥

अग्नि में हवन कर ले हाथ पैर धो करके आसन पर बैठे

तीन बार गायत्री जप करें-

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

अपसव्य दक्षिणाभिमुख पिंड-वेदी निर्माण -

पत्ते के उत्तर चौकोर बालू या तीर्थ-मिट्टी की वेदी बना कर उस पर समन्त्रक कुश से बायें हाथ के अँगूठे और तर्जनी के बित्ते से तीन रेखा दक्षिण-उत्तर नीचे से ऊपर बनवावे और उस कुश को ईशान में फेंक दे।

बालु पर तीन रेखा करे

ॐ अपहता असुर रक्षाऽसि वेदिशदः।

अंगार-भ्रमण-

कुश की लुकारी या आग को एक कुश द्वारा वेदी पर समन्त्रक घुमाकर उस आग

को वेदी से दक्षिण निकाल दे ।

आग को पक्षिम से पूर्व कि और टारे-

मन्त्र

ॐ ये रूपाणि प्रतिमु चमाना असुर संतः स्वाध्याय चरन्ति।
परपुरो निपुरो ये भ्रान्त्यग्निष्टान्लोकान् प्रणुदत्यस्मात्।

सव्य पूर्वाभिमुख तीन बार गायत्री जप करे ।

आसन दान--

कर्ता बेदी पर पत्ते के ऊपर तीन कुश दक्षिणाय रख दे।

अवनेजन दान -

एक दोनी से जल तिल कुश ले कर बेदी पर कुश रखा है।
इस पर आधा जल गियने बालू पर)

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अमुकमासिक श्राद्धे पिण्ड-स्थानेऽत्रावने नीक्ष्व ते माया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

....

पिण्ड दान

पाकन का गोल पिंड बना कर पितृ तीर्थं से स-संकल्प पिंड अकेले खुशों पर रख दे। पिण्ड दे बिच में बालू पर

संकल्प-

ॐ अमुकगोत्र अमुकप्रेत् अमुकमासिकश्रद्धे एष पिण्डस्ते मया

दीयते तवोपतिष्ठताम्।

करप्रक्षणो

एक कुश की जड़ से कर्ता अपने हाथ को समन्त्रक पोंछ कर पिण्ड के समीप रख दे ।

मन्त्र-

ॐ लेपभाग्भुजस्तृप्यन्ताम्।

सव्य पूर्वाभिमुख गायत्री जप तीन बार करे ।

दक्षिणाभिमुख प्रार्थना -

ॐ अत्र पितृमाद्यस्व यथा-भाग-मा-वृषा-यस्व।

श्वांसावरोध विसर्जन -

कर्ता दक्षिण मुह से उत्तर मुँह फेर कर प्रेत का ध्यान करते हुये अपना स्वांस रोक कर दक्षिण मुख करके स्वांस छोड़ दे ।

तन्मंत्रः-

ॐ अमीम-दन्त पितरो यथा-भागमा-वृषा-यिष्ट।

प्रत्यवनेजन

अवनेजन वाली दोनिया से पुनः पिण्ड के ऊपर प्रत्यवनेजन स-संकल्प दे । - दोनी में जो जल बच्चा है उसको पिंड पर गिराओ

संकल्प

ॐ अद्य अमुकगोत्र अमुकप्रेत अमुकमासिकश्रद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निशव ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

नीवीस्त्र सन -

[कर्ता अपने कमर में खोंसी सरसों समेत दोनिया को निकालकर पृथ्वी पर रख दे।]

पूर्वाभिमुख तीन बार गायत्री जप

पुनःआरंभ अपसव्य दक्षिणाभिमुखः

सूत्र दान-

मंत्र ॐ एतते पितर वास:

एक सूत्र लेकर पिण्ड के ऊपर दक्षिण-उत्तर दोनों हाथों से रख दे।

सूत्र संकल्प - अक्षततिल जल-

ॐ अद्य अमुकगोत्र अमुकप्रेत् अमुकमासिकश्रद्धे एतद् वसस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

थोरा सा अन्न छुटा लेकर के पिंड के चारों तरफ गिराए

पिण्ड-पूजन-

पिंड को स्नान कराएं, चंदनादी से पूजन करें!

अक्षत दान-

कर्ता पत्ते के ऊपर समन्त्रक जल, फूल और अक्षत चढ़ावे ।

जल दान मंत्र-ॐ शिव आपः सन्तु।
पुष्प दान मंत्र-ॐ सौम्यस्यमस्तु।
अक्षत दान मंत्र-ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु।

अभय दान संकल्प - पिण्ड पर अक्षत दिले

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अमुकमासिकश्रद्धे दत्तेतद्-
नन्नपानादिकमक्ष्यमुप्तिष्ठताम्।

प्रार्थना-

सव्य पूर्वाभिमुख गायत्री जप तीन बार ।
ॐ अघोरः पितामत्।

जलधारा दान-

जलपात्र का मुह पूर्वाभिमुख करके जल की धारा पिण्ड पर दे।

पुनः प्रार्थना- पुर्व की ओर-

ॐ गोत्रन्नो वर्द्धताम् दातारो नोऽभिवर्द्धन्तम्। वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यग्मद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेत्
अतिथिंश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च यचिश्चं कञ्चन।
एताः सत्य आशीषः सन्तु।

दुग्ध-धारा दान-

अपसव्य दक्षिणाभिमुख
पिण्ड पर एक कुश रखकर पाक वाले बर्तन में दूध लेकर पिण्ड पर के कुश पर

दक्षिणाग्र मुख से डाले ।

पिंडग्राहण कुश प्रक्षेप-

कर्ता पिण्ड को सूध कर बायें हाथ पर रख कर पिण्ड के नीचे से कुशों को और

अग्नि-भ्रमण वाली आग को आग में डाल दे ।

अर्थ-चालन-

प्रेतासन से पश्चिम अर्घ बाली दोनिया को उलट दे ।

दक्षिणा दान संकल्प-

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अमुकमासिक श्राद्ध
प्रति- ष्ठार्थं देयदक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे
ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

दीप-निर्वाण-

कर्ता अपने दोनों हाथों की ह्वा से दीप बुझा दे। सव्य पूर्वाभिमुख तीन बार गायत्री जप के बाद ।

प्रार्थना मन्त्र

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्राच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्तथा तवोयज्ञक्रियादिषु ।

यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।
इति मासिक श्राद्ध समाप्त ।
=====================================

[पितर-मिलौनी]

[सपिण्डीकरण श्राद्ध में उचित है कि अस्तंगत (मृत्यु प्राप्त) प्राणी की पितरों के साथ उदय करे। उदयास्त दिशा के विचार से पूर्व में उदित पितरों का श्राद्ध और पश्चिम में प्रेत श्राद्ध सम्पन्न कर पश्छिम से पूर्व तरफ प्रेत को पितरों के साथ मिलाकर उदय करे, किन्तु लोक प्रथा भिन्न-भिन्न प्रकार की है। कहीं-कहीं लोग पूर्व में ही प्रेत श्राद्ध कर पश्छिम में पितरों के साथ मिलाते हैं। पुरोहित वर्ग लोक- प्रथानुसार ही कर्म सम्पन्न करावें ।]
सपिण्डीकरण श्राद्ध में देवकर्म, प्रेतकर्म और पितृकर्म होते हैं। देवता और पितरों के लिये एक साथ तथा प्रेत के लिये अलग पाक बनायें। पाक बनाते समय ध्यान रहे कि किसी पाक से किसी पाक का स्पर्श न हो ।

श्राद्धरम्भ विश्वेदेवा कर्म

सब्य पूर्वाभिमुख कर्ता पवित्रीकरण मन्त्र-
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

गायत्री से शिवा-बन्धनपूर्वक आचमन तीन बार करे ।

मन्त्र-
ॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ गोविन्दाय नमः ।

पवित्री (पैती) धारण-

पैती भी हो जगह के लिये दो रहनी चाहिये ।
ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।

श्राद्धीय पात्रकरण-

दो जलपात्रों के मुह हाथ से ढाँप कर गङ्गादि तीयों का आवाहन समन्त्रक कर "ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो नमः" इस मन्त्र द्वारा गङ्गाजल, तिल, चन्दन, पुष्प बौर कुश प्रक्षेप कर दोनों पात्रों में दो जड़ वाले कुशों के अग्रभाग में ग्रन्थि देकर आचमनी की जगह डाल दे। एक-एक पात्र देवकर्म और पितृकर्म के लिये अलग रख दे।

आवाहयामि तीर्थानि

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

दिग्रक्षण-

एक दोनिया में पीली सरसों लेकर बायें हाथ पर रख कर दाहिने हाथ से डॉप कर मन्त्र द्वारा अभिन्त्रित कर, उन सरसों को नीचे की सकेतिक दिशाओं में छीटे । शेष बचे हुये सरसों की दोनिया समेत दाहिनी तरफ कमर में खोस ले ।

सरसों अभिमन्त्रण मन्त्र-

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम ।
इदं श्राद्ध हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ।।

ॐ प्राच्यै नमः (पूर्व में), ॐ प्रतीच्यै नमः (पश्चिम में), ॐ उदीच्यै नमः (उत्तर में), ॐ दक्षिणायै नमः (दक्षिण में), अन्तरिक्षायै नमः (ऊपर में), ॐ भूम्यै नमः (पृथ्वी पर)।

दीप प्रज्वासन-

तिल-तेल या घृत का एक दोप समन्त्रक जलाकर एक गड्डे में अक्षत छींट कर

भो दीप देवरूपस्त्वं श्राद्धसाची ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् श्राद्धसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव ।।

श्राद्ध संकल्प-

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुकषोडश-श्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीश्राद्धमहं करिष्ये ।

तीन बार गायत्री जप पूर्वक नीचे का मन्त्र जप तीन बार ।

मन्त्र-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः

विश्वेदेवा कर्म

सख्य पूर्वाभिमुख हो विश्वेदेवा के लिये एक बेदी बालू या तीर्थ-मिट्टी को बना कर एक पत्ता के ऊपर तीन कुश पूर्वाग्र रख कर जल और यव समेत त्रिकुश लेकर विश्वेदेवासन संकल्प करे।

संकल्प

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तक- श्राद्ध अमुकाऽमुकगोत्रणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहिनां (पितामही - प्रपितामही - वृद्धि प्रपितामहीनां) श्राद्धसम्वन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः।

आवाहन मात्र - -जव विश्व देवा के आसन पर छिटे

ॐ विस्वान् देवानहमवाहयिष्ये।

यगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये चात्र विहित श्राद्ध सावधान भवन्तु ते।

यव विकिरण मन्त्र-

ॐ यवोऽसि यवयस्माद्वेषोः।

अर्धपात्र करण- एका दोनी मे गंध पुष्पाक्षत रखे-

मृतपात्र प्याले में समन्त्रक जल, यव और कुश डाल कर, समन्त्रक चन्दन, फूल
डाल कर, उस पात्र को बायें हाथ पर दाहिने हाथ से ढाँप कर, मन्त्र द्वारा अभि मन्त्रित कर, विश्वेदेवा के आसन से पश्चिम एक पत्ते का बर्तन रख कर, उस पर दो कुश पूर्वाग्र रख कर उस पर थोड़ा जल छिड़क कर अर्धपात्र संकल्प पूर्वक उन्हीं कुशों पर गिरा कर उस अर्धपात्र को आसन से उत्तर ज्यों के त्यों समन्त्रक रख दे।

जलदान मन्त्र तिल डाले

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। संय्योरभिस्रवन्तु नः।।

यवदान मंत्र- जव डाले

ॐ यवोऽसि यवयस्माद्वेषो यवयारतिः। -

कुश दान मन्त्र -

ॐ पवित्रेस्थों वैष्णवौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवि-त्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

अर्थाभिमंत्रण मंत्र-- दोनी को बाएं हाथ रखकर दाहिने हाथ से ढके

ॐ या दिव्या आपः पयसा संवभूर्या अन्तरिक्षा उत् पार्थ- वीर्ययाः। हिरण्यवर्णा यज्ञ्यस्तां आपः शिवा श थे स्योना सुहावा भवन्तु।

संकल्प- नोट-- इस मंत्र से विश्वदेवा पर जल गिरवे दोनी से

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तकश्रद्धे अमुकामुखगोत्रणां 'पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानां (पितामही - प्रपितामही - वृद्धि प्रपितामहीनां) अमुकामुक- शर्मणां

(देवीनां) श्राद्धमम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष वो हस्तागों वो नमः।

स्त्री- श्रद्ध में सब जगह 'पितामह्यादि' को 'पितामह्यादि' और नाम के 'शर्मणा' को 'देवीनां' शब्द से संकल्प कर कर्म करें।]

नोट--विश्वदेवा के पत्ता से कुश उठाकर धोनी में रखे और विश्व देव के आसान से पश्चिम उलट दे

अर्धपात्र स्थापना मन्त्र -

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो स्थानमसि।

(विश्वेदेवा कर्म में जव का ही प्रयोग करे)

नोट-- विश्व देव के पात पर अक्षर छोड़ दे जहां चावल चूड़ा इत्यादि रखा हुआ है।

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तक- श्राद्धे अमुकामुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानां अमुकामुक्षशर्मणां (पितामही - प्रपितामही - वृद्धि प्रपितामहीनां) (देवीनाम) श्राद्ध समबंधदिनो विश्वेदेवा एतानि स्नान, चंदन, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यचमनीय, पूगीफल, ताम्बूल द्रव्यदिनी वो नमः।

मण्डल करण

आसन को पत्ते समेत जल से घेर दे।

मन्त्र- यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मंडलतोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

भू-स्वामी-

अपसव्य दक्षिणाभिमुख

पितृ-पाक में से थोड़ा अन्न-जल एक दोनिया में मधु लेकर एक कुश के ऊपर भू- स्वामी पितृ को समन्त्रक दे।

मंत्र -

ॐ इदमन्नमेतद्भु-स्वामीपितृभ्यो नमः। दोनी में अन्न भर करके यजमान अपने आसन से पूर्व उलट दे

विश्वेदेवार्थ बन्नादि दान-

नोट-- विश्व देवा के आसन पर अन्न परोसे और एक दोनी में जल लगाए अपना दोनो हाथ लगावे सीधा-

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिंधवः। माध्वीर्नः सन्तवो- पधिः।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिव गुँ रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिक-र्मधुमानस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
ॐ मधु मधु मधु।

पावलंभन-

बाएं हाथ लगाए रखें दाहिना हाथ उलट दे

मन्त्र -

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्त मुखेऽमृतेऽमृतं जुगोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिद्धे पदम्। समूढामस्य पा गुँ सुरे स्वाहा। ॐकृष्ण हव्यमिदं रक्षा मदीयम्।

अंगुष्ठ दर्शन -

बाएं हाथ लगा रहे दाहिना हाथ के अंगूठा से अन्न जल छुए

ॐ इदम्न्नम्, ॐ इमा आपः, ॐ इदमाज्यम्, ॐ इदं हविः।

यब विकिरण- थोड़ा सा जव लेकर के छिट दे-

ॐ यवोऽसि यवयस्मादद्वेषो यवयारातिः।

अन्नादि संकल्प-

बाएं हाथ लगा रहे दाहिने हाथ में जो जल लेकर मंत्र बोले

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तक श्राद्धे अमुकाऽमुक गोत्राणां पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामहनां (पितामही - प्रपितामही - वृद्धि प्रपितामहीनां) अमुकामुक- शर्मणां श्राद्धसम्वन्धिनो विश्वेभ्यो देवाय इदमन्नं सोपकरणं वो नमः।

विश्व देव कर्म संपन्न

>>

।।प्रेत कर्मम्भः।।

कर्ता देवकर्म समाप्त कर प्रेत पाक के सामने दूसरे बसन, जल पात्र एवं नयी पंती पहन कर प्रेत कर्मारम्भ करे ।

प्रेतासन -

बालू या तीर्थ मिट्टी की एक वेदी बनाकर उस पर एक पत्ते पर तीन कुषण दक्षिणाय रख कर संकल्प करे।

आसन संकल्प -

तिल जल लेकर के पीतर के आसन पर छिटे-

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्रद्धे इदमासनं ते माया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

तिल विकिरण- आसन पर तिल समन्त्रक छिटे।

ॐ अपहता असुरा रक्षा गुँ वेदीषदः।

प्रेत आवाहन

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्ध आवाहये।

दोनों हाथ प्रेत आसन पर लगाकर मंत्र बोले

ॐ आपन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निध्यताः पर्थिभि-र्देवयानैः अस्मिन् यज्ञे स्वध्या मदन्तो अधिबुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।

अर्धपात्र करण-

एकदोनी बाएं हाथ पर रहकर उसमें तिल अक्षत चंदन पुष्प इत्यादि रखें

ॐ शनयो देवीर्भिष्ठय आपो भवन्तु पीतये। शंगय्योरभिस्रवन्तु नः।

दोनी मे तिल रखे

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।
प्ररत्नमद्भिः प्रतः स्वधया पितृ लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।

दोनी मे पवित्री रखे

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णवौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रभूतस्य यत्कामः पुणे तच्छकेयम्।

बाएं हाथ पर रखकर दाहिना हाथ से ढके

ॐ या दिव्या आपः पयसा संब-भूवूर्यन्तरिक्षा उत्पार्थ वीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञि यास्तान आपः शिवा स गुँ स्योना सुहवा भवन्तु।

बाएं हाथ में दोनी रखे रहे दाहिने हाथ में अक्षत तिल जल

ॐ अय अमुकगोत्र अमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्रद्धे एप हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

प्रेत आसन पर रख दे

>>>

पितृ कर्म

सव्य पूर्वाभिमुख तीन बार गायत्री कप के बाय

अपसव्य दक्षिणाभिमुख
पितृ आसन पर बैठकर कुश धारण करें

वेदी निर्माण
बालू या तीर्थ मिट्टी से तीन बेदी बनाकर तीनों पर एक-एक पते पर तिन तीन कुश दक्षिणाग्र रखकर आसन संकल्प करे।

दाहिने हाथ में तिल जल
ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तक श्राद्ध अमुकामुकगोत्राः पितामह-अपितामह-वृद्धप्रपितामहः (पितामही - प्रपितामही - वृद्धि प्रपितामहीनां) अमुकमुख- शर्मनः इमन्या असनानि त्रिधा विभज्य युष्माभ्यं स्वधा।

मन्त्र- तिल अक्षत जल लेकर पितृ आसान पर
ॐ पितृनावाहयिष्ये।

दोनों हाथ लगाए आसन पर
ॐ उशन्तस्त्वा निधिमह्यु शांतः समि-धि-महि।
उशन्नुशतः आवह पितृन् हविषे अत्तवे।।

तिल विकिरण- तिल लेकर के दाहिने हाथ से छोड़ दे
ॐ अपहता असुर रक्षासि वेदिशदः।

पूर्वोक पद्धत्यनुसार तीन मृत पात्रों (प्याला) को बायें हाथ पर एक रामक, बल, तिल और कुन्दनाम कर पितरों के आसन के काटे उत्तर पत्ते का बर्तन रखकर प्रति पर दो-दो कुरा दक्षिणाय रख कर थोड़ा- थोड़ा जल छिड़क दे। इसके बाद बायें हाथ बाली प्यासियों को दाहिने हाथ से कौर कर मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर संपत्त बाले कुशों पर थोड़ा-

थोड़ा जल उद्देल कर शेष कलसहित व्याला पितरों के सामने रख दे।

चार दोनी में जल कुश फूल इत्यादि रखे-

ॐ शनो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शन्य्यो रभिस्रवन्तु नः।

तिल-

ॐ तिलोऽसि सोमदाय तयो गोसवो देवनिर्मितः।
रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृलोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा ॥

पवित्री-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णवौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवि-त्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुणे तच्छकेयम्।

बाएं हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढके-

ॐ या दिव्या आप: पयसा सम्बभुवुर्याऽन्तरिक्षा उत् पार्थवीर्यः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता आपः शिवा स गुॅं स्योना सुहवा भवन्तु।

नोट- पिता प्रपीता वृद्धि प्रपीता के आसन पर चार दोनी मे जल अक्षत फूल इत्यादि रखें

संकल्प पृथक पृथक करें पिता प्रपीता वृद्धिप्रपीता -

(1)ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्रद्धे अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् एष हस्तार्धस्ते स्वधा।

(2)ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्रद्धे अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् एष हस्तार्घस्ते स्वधा।

(3)ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तक

श्रद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामह अमुकशर्मन् एष हस्तार्घस्ते स्वधा।
>>

अर्धपात्र मेलन (प्रेत आसन पर बैठे)

इसके बाद प्रतारान पर पूर्वोक्त ढङ्ग से जाकर दो पत्ती बाला एक कुश लेकर दोनों हाथों की मध्यमा अनामिका अंगुलियों को उन कुशों के मध्य में रख कर प्रेतार्थ- पात्र के जल में हुबावे, जिससे जल तीन हिस्सों में बंट जाये। इसके बाद समन्त्रक उस जल को पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामह के अर्थपात्रों में थोड़ा-थोड़ा जल मिला कर पितामह-पात्र प्रेतपात्र के नीचे, इसके बाद प्रपितामह का अर्थपात्र इसके नीचे और सबसे नीचे वृद्धप्रपितामह का अर्धपाच लेकर प्रेतासन से पश्चिम तरफ समन्त्रक उलट कर रख दे और दक्षिणाद न पर्यन्त स्पर्श न करे ।

अर्धपात्र जलमेलन का मन्त्र-

प्रेत दोनी के जल से' पितर तीनों दोनी के जल में मिलाए

ॐ ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्।।1।।
ॐ ये समानाः समनमो जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषां श्रीर्मयि कल्पतामस्मिल्लोके शत गुँ समाः ॥ 2॥

नोट-

इस प्रेत दोनी को पूर्व उलट दें--
इस पितर दोनी तीनों को एक जगह करके पश्चिम उलट दे--

प्रतार्थ उलटने का मंत्र-

ॐ पितृभ्यः स्थानमसि

पहले प्रेतासन पर प्रेत पूजन, पश्चात् पितरों का पूजन स्नान, वस्त्र, यशो- पवीतादि से करके संकल्प करे ।[प्रेत कर्म के बाद पितृ कर्म और पितृ कर्म के बाद प्रेत कर्म करने में पंती एवं बैठने का आसन बदलना जरूरी है।]

प्रेत-पूजन संकल्प- प्रेत भाग पर अक्षत छिटे

ॐ अद्य अमुकगोत्र अमुकप्रेत् सपिण्डीकरणश्रद्धे एतानि स्नान, चंदन, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यचमनीय, पूगीफल, ताम्बूल, द्रव्यदिनी ते माया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्तम्।

पितृ पूजन संकल्प- पितृ भाग दक्षिण पात पर अक्षत छींटे

[समझ कर संकल्प अलग-अलग करे, नीचे एक ही साथ कोष्ठक देकर लिखा जाता है।]

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तकश्रद्धे अमुकगोत्र पितामह (प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह) (मातामह प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह) अमुकशर्मन् (देवीनां) एतानि स्नान, चंदन, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यचमनीय, पूगीफल, ताम्बूल, द्रव्यादीनि ते साधः ॥ 3 ॥

मंडलीकरण-

पहले प्रेतासन पात्र समेत जल द्वारा घेर कर तब पितरों के आसन पत्तों के समेत समन्त्रक घेर दे।

मण्डलीकरण मंत्र -

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मंडलोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

सव्य पूर्वाभिमुख गायत्री मंत्र। जन तीन बार।

मन्त्र-

ॐ अग्नये काव्यवाहनाय स्वाहा ॥1॥ ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा ॥ 2॥

अन्नादि दान-

पहले प्रेत को तब पितरों को अन्नादि दान करे। पूर्वोक्त पद्धत्यनुवार चार दोनिया लेकर एक में अन्न, दूसरे में जल, तोसरे में घृत नौर चौथे में मधु प्रेत के पत्ते पर रख दे और दाहिने हाथ के अंगूठे में मधु लगा कर अनादि में स्वशं समन्त्रक करे। इसी रोति से पितरों के पत्त पर भी करना है।

नोट--दो दोनी ले एक धोनी में तील जल' दूसरा में जव जल अन्न रख ले
तिल वाला दोनी से अन्न प्रेत का पत्ता पर रख दे
जव वाला दोनी से अन्न पितर वाले पत्ता पर रख दे
फिर अन्न के बर्तन से अन्न परोस दे

मन्त्र- दोनों हाथ लगाए

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिंधवः। माधवीर्नः सन्त्वो-षधिः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिव गुॅ रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमानस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। ॐ मधु मधु मधु।

(यही मन्त्र पितरों में भी प्रयुक्त करे)

ध्यायान दे --प्रेत पाक मे से प्रेत के लिये और पितृ-पाक में से पितरों के लिये करना चाहिये ।

पात्रालम्भन

बाएं हाथ लगाए रखें दाहिने हाथ पलट के लगाए

मन्त्र-

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतेऽमृतं जुगोमि ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निद्धे पदम्। समूदमस्य पा गुॅ सुरे स्वाहा।

चारो जगह दोनी में जल लगाए

अंगुष्ठ दर्शन-

बाएं हाथ लगाए रखें और दाहिने हाथ के अंगूठे से अनादि पर समन्त्रक दिखावे ।

मन्त्र-

कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्। ॐ इदमन्नम्। ॐ इमा आपः। ॐ

इदमाज्यम्। ॐ इदं कविः।

तिल विकिरण-

पत्ते के ऊपर समन्त्रक तिल छिड़के ।

मन्त्र- ॐ अपहता असुर रक्षासि वेदिशदः।

सोपकरण अन्नादि दान संकल्प-

बाया हाथ लगाए रखें। दाहिने हाथ में अक्षत जल प्रेत वाला पर छिते

ॐ अद्य अमुकगोत्राय अमुकप्रेताय सपिण्डीकरणश्रद्धे इदन्नं सोपकरणं ते माया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पितृ कर्म ऊपर के मंत्रों द्वारा कर ले और अन्नादी संकल्प यहां से करें

सोमकरण अन्नादि दान-

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्रद्धे एतानि सोपकरणानि अमुकाऽमुकगोत्रेभ्यः पितामह-प्रपितामह - वृद्ध प्रपितामहेभ्यः अमुकाऽमुक शर्मभ्यः त्रिधा विभज्य युष्माभ्यं स्वधा।

यजमान गायत्री जप करें

कृणुख पाठ पुरुष सूक्त भद्र सूक्त इत्यादि करें

>>>

अग्नि दग्धा-

एक धोनी में अन्न लेकर के अपने आसन से पश्चिम उलट दे

मन्त्र-

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीव येऽपदग्धाः कुले मम।

भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यन्तु परां गतिम्।।

असंस्कृत प्रणितानां त्यागिनं कुलभागिनाम्।
उच्छिष्ट भागधेयानां दर्बेषु विकिराऽसनम्।।

हस्तपाद-प्रक्षालन, सव्य पूर्वाभिमुख तीन बार गायत्री जप

>>>

पिबवेदी निर्माण

पहले प्रेत के तब पितरों के पिण्डार्थ बालू या तीर्थमिट्टी की बेदी बनाकर पहले प्रेत-वेदी पर तब पितरों की वेदियों पर बायें हाथ के अंगूठा तर्जनी से बित्ता बना कर कुण के तीन-तीन रेखायें नीचे से ऊपर तक समन्त्रक खोंचे और कुशों को फेंक दे।

मन्त्र-रेखाकरण

ॐ अपहृता असुर रक्षार्थ सि वेदिशदः।

अङ्गार-भ्रमण

पहले प्रेत बाली पिण्डवेदी पर तब पितृ-पिण्डवेदियों पर आग की टुकड़ी या कुश को लुरुवारी समन्त्रक घुमा-घुमा कर उस आग को वेदी के दक्षिण तरफ निकाल दे।

मन्त्र- आप का भरमन करे

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुरा संतः स्वध्यय चरन्ति।
परापुरा निपुरो ये भरन्त्य-ग्निष्टांलोकान् प्रणु-दात्यस्मात्।।

इसके बाद इन प्रेत पिण्डवेदी और पितृपिण्डवेदियों पर एक-एक पत्ते पर तीन- तीन कुश दक्षिणाग्र रख दें।

पूर्व की ओर गायत्री मंत्र बोले

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः

प्रेत की बेदी पर आवेदन दान संकल्प

एक दोनी में जल तिल कुश लेकर बेदी पर आधा जल गिराए बालू पर कुश रखा है
ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्रद्धे पिण्ड-स्थानेऽत्रावणे नीक्ष्व ते माया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पितृ पिंड वेदियों पर आवेदन दान संकल्प

दोनी बाएं हाथ में रखे रहे दाहिने हाथ में तिल अक्षत जल/' एक-एक बार जल तीनों जगह गिराए-
ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तक श्राद्धे अमुकगोत्र पितामह (प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह) अमुकशर्मन् पिण्ड-स्थानेऽत्रवने नील्य ते स्वधा।

// इसके बाद पूज्य आचार्य, पुरोहित वगैरह का संकल्प वरण यथाशक्ति करे।
ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्रद्धे अभि-रवर्णसामग्रिभिरमुकगोत्रम् अमुकश्रमणं ब्राह्मणं आशीर्वादचत्वेन त्वामहं वृद्धे।
वरण लेनेवाले ब्राह्मण 'स्वस्ति' बोलकर कर्ता के ऊपर अक्षत छींट दे।//
....

[प्रेत का पिण्ड लम्बा और पितरों का पिण्ड गोल होना चाहिये]
संकल्प करके अब प्रेत पिंड प्रधान बेदी के बाएं रखें
ॐ अद्य अमुकगोत्र अमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्रद्धे एष पिंडस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।
हस्त प्रोक्षण-
प्रेत-पिण्ड के बाद और पितृ पिण्डके बाद एक कुश की जड़ से हाथ में लगे अन्न को पोंछ-पोछ कर उन सभी पिण्डों के समीप समन्त्रक रख दें।
ॐ लेपाभाग्भुजस्तृप्यन्ताम्।

पितृ-पिण्डदान संकल्प पृथक पृथक तीनों पिंड रखें

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तकश्रद्धे अमुकगोत्र (पितामह प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह) अमुकशर्मन् एष पिण्डस्ते स्वधा।

सब्य पूर्वाभिमुख गायत्री जप तीन बार

श्वांसावरोध विसर्जन--

पहले प्रेतकर्भ तब पितृकर्म बारी पारी से करे। अपने श्वांस उत्तराभिमुख रोक करके पूर्वक दक्षिणाभिमुख होकर श्वांस छोड़े।

प्रतार्थ मंत्र-- दोनों हाथ उठाए

ॐ अविमदन्त पिन्मादयम्व यथाभागमायाधिपत्
ॐ यत्र पित्रो मदयध्वं यथाभागमावृषयध्वम्।

प्रत्यवनेजन दान-

पहले प्रेतपिण्ड पर पुनः पितरों के पिण्डों पर प्रत्यवनेजन दान संकल्प अवनेजन बालो दोनियों से दे।-

एक दोनी में जल तिल फूल लेकर प्रेत पिंड पर जल गिराए--

ॐ अद्य अमुकगोत्र अमुकप्रेत् सपिण्डीकरणश्रद्धे पिंडेऽत्र प्रत्यवने नीक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पितृ निवित प्रत्यवनेजन दान संकल्प-

अब दोनी में जल तिल फूल लेकर पितृ पिंड पर जल गिराए--

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डी करण निमित्तक श्रद्धे पिंडे अमुकगोत्र (पितामह प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह) अमुकशर्मन् (देवीनां)अत्र प्रत्यवने नीक्ष्व ते स्वधा।

कमर में खोंसी सरसों समेत दोनो निकाल कर पृथ्वी पर रख दें।

सूत दान प्रेत निमित्त-
एक सूत प्रेत-पिण्ड पर दक्षिण-उत्तर समन्त्रक रख दे।
मन्त्र-ॐ एतते पितृवासः।

सूत्र दान वितृ निमित्त-

तीनों पिण्डों पर एक-एक सूत समन्त्रक दक्षिण-उत्तर रख दे।

मन्त्र
ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शेषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो द्वेष्म्। एतद्वः पितरो वासः।

प्रेतसूत्र वस्त्र संकल्प

ॐ यद्य अमुकगोत्र अमुकप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्ध एतद्वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पितृ निमित्त सूत्र संकल्प

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्रद्धे पिंडे अमुकगोत्र पितामह (प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह) अमुक- शर्मन् एतते वासः स्वधा।

पूजन-
पहले प्रेत पिण्ड का तब पितृपिण्डों का स्नानादि से पूजन करे।
अन्न विकिरण-
पहले प्रेत-पाकवाले बर्तन में तब पितृ-पाकवाले बर्तन में से सटे अन्न को निकाल- निकाल कर सभी पिण्डों

के समीप रख दे।

पिंडच्छेदन तथा पिंडमेलन-

नाई से दो पत्ते वाला एक कुछ लेकर कुश के पत्ते के बीच में कर्ता अपनी बनामिका तथा मध्यमा अंगुली रख कर पिण्ड पर रख दे और दबा दे कि पिण्ड तीन भाग हो जाय। इन तीन भागों को पितृ-पिण्डों में समन्त्रक मिलावे ।

प्रेत पिंड को तीन खंड कांटे और तीनों को एक-एक कर तीनों पीतर पिंड में मिलाए

मन्त्र-

ॐ ये समानाः समनसः पितरो यमसामे।
तेषं लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्।।
ॐ ये समानाः समनसो जीव जीवेषु मामकाः।
तेषां श्रीर्मयि कल्पतामस्मिल्लोके शत गुँ समाः।।

इसके बाद पितृ-पिण्डों को प्रेत-पिण्डों समेत एक जगह मिला कर एक गोल पिण्ड बनाकर एक बर्तन में रख कर स्नानादि से पूजन करे ।

अक्षय दान

सब्य पूर्वाभिमुख विश्वेदेवा के पत्ते पर और अपसव्य दक्षिणाभिमुख प्रेत-पितृ-पत्तों पर समन्त्रक बल, फूल, अक्षत छोट-छींट कर संकल्प करे।

जलदान मंत्र - ॐ शिव आपः सन्तु।
पुष्पदान मंत्र-ॐ सौम्यस्यमस्तु।
अचक्षत दान मंत्र - ॐ अत्ततं चारिष्टमस्तु।

संकल्प विश्वेदेवा-

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य पितृमुक्षर्मणः सपिण्डैकानिमित्तक- अहे अमुकाऽमुकागोत्रणां पितामह, प्रपितामह, वृद्धप्रपितामहानां अमुकामुक्षशर्मणां श्राद्धबन्धसमिनो विश्वेदेवदेवस्य दत्तैतदन्नपना-

दिकं अक्षयं वो नमः।

संकल्प मृतात्मा-

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य पितुरसुकशर्मण: सपिण्डीकरणश्राद्धे दत्तैत-दान्नपनादिकम क्षय्यमुपतिष्ठताम्।

संकल्प पितर--

ॐ अद्य अनुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मण: सपिण्डी करण निमित्तक श्राद्ध अमुकगोत्रस्य पितामहस्य (प्रपितामहस्य बृद्धप्रपितामस्य)अमुक शर्मण: दत्तैतदन्न-पानादिकम-क्षय्यमस्तु

पूर्व मुंह करके गायत्री मंत्र जाप करें तीन बार

मंत्र पाठ................

ॐ अधोरा: पितर: सन्तु। जल पत्र से जल गिराए

हाथ जोड़कर के प्रार्थना करें

गोत्र नो वर्द्धताम् दातारोनोऽभिवर्द्धन्ताम् वेदा: सन्त तिरेव च श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयंच नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथोंर्च लभेमही। याचितारश्च न: सन्तु मा च याचिष्म कंचन, एता सत्या आशिष:सन्तु।

आचार्य पठनीय मंत्र--सन्त्वेता: सत्या आशिष:

दूध धारा दान

ॐ ऊर्जां वहन्तीर मृतं घृतं पय: कोलालं परिश्रुतम्। स्वधास्थ

अयोध्या मधुरा माया काशी कांची ह्यवंतिका।
पुरी द्वारावती चेति सप्तैता मोक्ष दायिकाः।।

दक्षिणा दान विश्वदेव

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः सपिण्डि करण निमित्तक- श्राद्धे अमुकामुकगोत्राणां पितामह,-प्रपितामह, वृद्धप्रपितामहानाम् अमुकमुक शर्मणां श्राद्ध संबंधिनो विश्वेदेवा श्राद्ध प्रतिष्ठार्थ देय- दक्षिणा द्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकश्रमणे बह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

दक्षिणा दान मृतक

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः सपिण्डीकरणश्राद्ध-प्रतिष्ठार्थ देय दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे बह्मणाय तुभ्यमहं सम्पददे।

तर्पयत में पितृन ।

कर्ता पिण्ड को पहले सूधकर तब प्रेत-पिण्ड के नीचे वाले कुशों को और अग्नि- भ्रमण वाली आग को आग में डाल दे।

पिण्ड को पात्र-समेत अपने कन्धों पर लेकर मन्त्र पड़े।

पंचकोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गया शिरः।
तारयेत् कुल गोत्राणां एक विंसोत्तरं शतम्।।

दक्षिणा दान पितरों का--

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य पितुरमुशर्मणः सपिण्डी करण निमित्तिक- श्राद्धे अमुकगोत्रणां पितामह,-प्रपितामह, वृद्धप्रपितामहानाम अमुका- मुशर्मणां श्राद्धप्रतिष्ठार्थ देय दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुक- ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्पददे।

सव्य विश्वेदेवा विसर्जन

मन्त्र पढ़ते हुए अक्षत फोटे।

मन्त्र-

ॐ विश्वेदेवः प्रियन्ताम्।

अपसव्य पितृ विसर्जन मंत्र-

ॐ आमा वाजस्य प्रसवो जगम्यदेमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे।
आमा गन्तं पितरा मातरा चामा सोमोऽमृतत्वेन गम्यन्तम्।।

दीप निर्वाण

दोनों हाथों द्वारा दीप बुझा दे।

सभ्य ईश्वर प्रार्थना

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेशु यत्।
स्मरणदेव तद् विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नमोक्त्या तपो-यज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो बंदे तमच्युतम् ॥

इति सपिण्डीकरणबार समाप्त।